जनसत्ता रविवारी
• 22 मार्च 2020 •

रहीम ने बहुत पहले आगाह कर दिया था- बिन पानी सब सून। कुदरती संसाधनों के अंधाधुंध दोहन के दौर में कवि का दोहा, उसकी पानीदार सीख कहीं पीछे छूट गई। आज हम जल संकट की आहट से आगे निकल आए हैं। यह संकट आज दूर नहीं बल्कि सामने है। भारत की 60 करोड़ आबादी इस कदर बूंद-बूंद पानी के लिए मोहताज है कि उनके लिए विकास और समृद्धि के दूसरे दावों का कोई मतलब नहीं है। अगले एक दशक में देश के बीस से ज्यादा महानगर अपनी चमक से ज्यादा पानी के लिए मची हाय-तौबा के लिए एक-दूसरे से होड़ लेते दिखेंगे। विश्व जल दिवस पर पानी से जुड़े इन्हीं खतरों और उससे पार पाने की उम्मीदों पर रविवारी की खास प्रस्तुति।

...फिर पानी दे मौला



गरज बरस प्यासी धरती पर फिर पानी दे मौला, निदा फाजली की इस गजल को कई गायकों ने गाया है। पर किसी ने भी इसे चढ़े स्वर में नहीं गाया। सबने इसे प्रार्थना की तरह गाया, अजान की तरह तान भरी। दिलचस्प है कि कोस-कोस पर पानी और बोली का फर्क भांपने वाले देश में पानी कभी ऐसा मसला नहीं रहा, जिसकी चर्चा अलग से हो या उसे लेकर खूब सिर धुना जाए। पानी का जिक्र करते हुए हर तरह की तल्खी से बचने वाले भारतीय समाज के लिए जल हमेशा से एक सांस्कृतिक मसला रहा है। आज अगर जल संकट जैसा विषय सरकार और समाज के माथे पर बल ला रहा है तो इसलिए कि हमने अपने सांस्कृतिक अभ्यास और सीख की लंबी परंपरा का साथ बहुत आसानी से छोड़ दिया। इसके बदले हमने तवज्जो दी उस होड़ और समझ को, जिसे विकास और समृद्धि का उत्तर चरण करार दिया गया है। जिस पानी से कभी हमारा रहन-सहन और जीवन सब कुछ पानीदार हुआ करता था, वह पानी आज हमारे रोजमर्रा के अनुभव में सिर्फ प्यास और उसके लिए मचने वाला हिंसक हाहाकार है। शुक्र है कि इन त्रासद स्फीतियों के बीच भी मनुष्य के पानीदार विवेक का लोप इतना ज्यादा भी नहीं हुआ है कि हम आगे के लिए कोई रास्ता ही न निकाल सकें। इसके लिए आगाह करने वाली स्थितियों के साथ उम्मीद जगाते कुछ हालिया तजुर्बों का जिक्र जरूरी है।

बड़े संकट की चेतावनी

नीति आयोग के सर्वे के अनुसार देश में 60 करोड़ आबादी भीषण जल संकट का सामना कर रही है। अपर्याप्त और प्रदूषित पानी के इस्तेमाल से देश में हर साल दो लाख लोगों की मौत हो जाती है। यूनिसेफ के मुहैया कराए गए विवरण के अनुसार भारत में दिल्ली और मुंबई जैसे महानगर जिस तरह पेयजल संकट का सामना कर रहे हैं, उससे लगता है कि 2030 तक भारत के 21 महानगरों का पानी पूरी तरह से समाप्त हो जाएगा और वहां पानी अन्य शहरों से लाकर उपलब्ध कराना होगा। लातूर और हैदराबाद के लिए ऐसा पहले करना भी पड़ा है। इस कड़ी में नया नाम शिमला का है।

ग्यारह शहरों का रोना एक

दुनिया में मीठा पानी केवल तीन फीसद है और यह सबको और हर जगह सुलभ नहीं है। दुनिया में सौ करोड़ अधिक लोगों को पीने का साफ पानी उपलब्ध नहीं है जबकि 270

देश में पानी की मांग

क्षेत्र	वर्ष 2000	2025	2050
घरेलू उपयोग	42	73	102
सिंचाई	541	910	1072
उद्योग	08	22	63
ऊर्जा	02	15	130
अन्य	41	72	80
कुल	634	1092	1447

आंकड़ा : बिलियन क्यूबिक मीटर में

* स्रोत: केंद्रीय जल आयोग

करोड़ लोगों को वर्ष में एक महीने पीने का पानी नहीं मिलता। इसी तरह 2014 में दुनिया के 500 बड़े शहरों में हुई एक जांच में पाया गया है कि हर चार में से एक नगरपालिका पानी की कमी की समस्या का सामना कर रही है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार 'पानी की कमी' तब होती है जब पानी की सालाना आपूर्ति प्रति व्यक्ति 1700 क्यूबिक मीटर से कम हो जाती है। ऐसे कई हालिया अध्ययनों के आधार पर दुनिया के जिन 12 शहरों पर पानी की किल्लत की मार सबसे ज्यादा पड़ने वाली है, वे हैं- केपटाउन, साओ पालो, बंगलुरु, बेजिंग, काहिरा, जकार्ता, मास्को, इस्तांबुल, मेक्सिको सिटी, लंदन, तोक्यो और मियामी।

साफ पानी की बड़ी कीमत

राष्ट्रीय हरित पंचाट (एनजीटी) ने मई 2019 में सरकार को दो टूक कहा था कि जिन इलाकों में पानी ज्यादा खारा नहीं है, वहां आरओ प्यूरीफायर पर प्रतिबंध लगा दिया जाए। अपने निर्देश में पंचाट ने यह भी कहा था कि केवल 60 फीसद से ज्यादा पानी देने वाले आरओ के इस्तेमाल को ही मंजूरी दी जाए। राष्ट्रीय हरित पंचाट के निर्देश के बाद केंद्र सरकार ने इस संबंध में मसौदा तैयार कर लिया है। हालांकि यह शिकायत अब भी है कि सरकार ने अपने मसौदे में पंचाट की चिंताओं को उतनी गहराई से नहीं लिया है, जितनी उम्मीद थी।

जल बिन जलाशय

देश के कई हिस्सों में गर्मी तेजी से बढ़ती जा रही है और बड़े जलाशयों में पानी का स्तर घटता जा रहा है। दो साल पहले केंद्रीय जल आयोग ने चेताया था कि देश के बड़े जलाशयों में पानी का स्तर औसतन 15 फीसद तक कम हो गया है। जल संग्रहण की कमी के कारण आलम यह है कि महाराष्ट्र में ठाणे के शाहपुर ब्लॉक के कई गांवों में पानी भरने के लिए महिलाएं मीलों चलने को मजबूर हैं। यह संकट महाराष्ट्र तक ही नहीं, देश के बड़े हिस्से में है।

चेता रहा उपग्रह

पानी को लेकर जिस तरह की पूर्व चेतावनी उपग्रह प्रणाली के अध्ययन पर आधारित रिपोर्ट के जरिए मिली है, वह भयावह है। यह रिपोर्ट भारत में एक बड़े जल संकट की ओर इशारा करती है। दुनिया के 500,000 बांधों के लिए पूर्व चेतावनी उपग्रह प्रणाली बनाने वाले डेवलपर्स के अनुसार भारत, मोरक्को, इराक और स्पेन में जल संकट 'डे जीरो' तक पहुंच जाएगा। यानी नलों से पानी एकदम गायब हो सकता है।

इंच दर इंच चढ़ रहा सागर

वैज्ञानिकों के एक समूह ने अपनी चेतावनी वाली रिपोर्ट में कहा है पिछली एक सदी में समुद्री जलस्तर 14 सेंटीमीटर तक बढ़ गया है और यह वैश्विक तापमान में बढ़ोतरी के चलते हुआ है। समुद्र का जलस्तर इतनी तेजी से बढ़ा है, जितना पिछली 27 सदियों में नहीं बढ़ा।

रिपोर्ट में कहा गया है कि 1900 से 2000 तक वैश्विक समुद्री जलस्तर 14 सेमी या 5.5 इंच बढ़ा है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि ग्लोबल वार्मिंग न होती, तो यह वृद्धि 20वीं सदी की वृद्धि की आधी से भी कम होती।

इस रिपोर्ट के प्रमुख लेखक और 'रूटजर्स डिपार्टमेंट ऑफ अर्थ एंड प्लेनेटेरी साइंसेज' के एसोसिएट प्रोफेसर रॉबर्ट कोप ने कहा, 'पिछली तीन सदियों के संदर्भ में 20वीं सदी की वृद्धि अभूतपूर्व थी। पिछले दो दशकों में वृद्धि बहुत तेज रही है।'

कोप चिंता जताते हुए कहते हैं, 'यह हैरान करने वाला है कि हमने समुद्री जलस्तर के इस बदलाव को वैश्विक तापमान में हल्की गिरावट के साथ जुड़ा हुआ देखा।' तुलनात्मक तौर पर देखा जाए तो आज वैश्विक औसत तापमान 19वीं सदी के अंत के तापमान से एक डिग्री सेल्सियस ज्यादा है। ❑

रेत पर हरित आस

बिफूर एक गांव है और यह राजस्थान के टोंक जिले के मालपुरा ब्लॉक में पड़ता है। बिफूर के किसान नाथूराम के पास 1.8 हेक्टेयर जमीन है। दो दशक पहले तक तक अपनी इस जमीन से वे हर साल करीब सवा लाख रुपए मूल्य की फसल पैदा कर लेते थे, लेकिन पानी की कमी ने धीरे-धीरे उनकी पैदावार कम कर दी। इस तरह उनकी करीब आधी जमीन बेकार हो गई। हालात इतने बदतर हो गए कि बहुत मेहनत से भी खेती करते तो भी बीस हजार रुपए से ज्यादा कीमत की फसल पैदा नहीं कर पाते थे। उन्हें कुछ समझ नहीं आ रहा था कि खेती छोड़ आखिर वे करेंगे भी क्या। फिर एक संस्था की पहल ने गांव की दशा बदल दी। आज से डेढ़ दशक पहले तक 'ग्लोबल वार्मिंग' के कारण पैदा होने वाली जो त्रासदी बिफूर की सच्चाई थी, आज उसका वहां के लोगों के लिए कोई मतलब नहीं रह गया है।



दरअसल, बिफूर जब अपनी खेती-किसानी के हाल को लेकर बेहाल था तो वहां जयपुर की गैरसरकारी संस्था सिकोईडिकोन (सेंटर फॉर कम्युनिटी इकोनॉमिक्स एंड डेवलपमेंट कंस्लटेंट सोसायटी) ने कदम रखा। इस संस्था ने पंचायत के सहयोग से सबसे पहले लोगों में यह अहसास जगाने की कोशिश की कि यह उनका ही काम है और उन्हें ही करना है। इस तरह सबसे पहले इलाके के कुओं को गहरा किया गया। पर कुओं को गहरा तो कर दिया गया लेकिन यह प्रयास भी बहुत सफल नहीं रहा। जल्द ही कुओं का जलस्तर और नीचे चला गया।

जाहिर है कि सिर्फ कुओं को गहरा करने से बिफूर की समस्या का समाधान नहीं होने वाला था। सालभर कुओं में जलस्तर बनाए रखने के लिए जरूरी था कि गांव में जल संरक्षण का काम शुरू किया जाए ताकि कुओं को और गहरा न किया जाए बल्कि भूजल स्तर ऊपर उठ सके। इस तरह इसके बाद ही बिफूर में जल संरक्षण का नया चरण शुरू हुआ। वहां मिट्टी के ही बांध बनाए गए ताकि पानी को रोका जा सके। अतिरिक्त पानी को नालियों के जरिए तालाब में पहुंचा दिया गया। इस तरह बांध और तालाब के कारण अब यह सुनिश्चित हो गया था कि कुएं में सालभर पानी बना रहेगा।

बड़ी बात यह है कि राजस्थान में इस तरह के प्रयोगों का सिलसिला इकहरा नहीं है। पर्यावरणविद अनुपम मिश्र ने अपनी दो किताबों 'आज भी खड़े हैं तालाब' और 'राजस्थान की रजत बूंदें' में इसका सुरुचिपूर्ण तरीके से जिक्र किया है। राजस्थान के ही लापोडिया में लक्ष्मण सिंह के पानीदार उद्यम की तो आज देश-विदेश में चर्चा है। दिलचस्प है कि राजस्थान में जल संरक्षण के ये सारे प्रयोग पारंपरिक और देशज तरीकों पर आधारित हैं। ❑



शिमला का शोक

भारत में आमतौर पर गर्मी आते ही जल संकट पर बातें शुरू हो जाती हैं। पर बीते दो वर्षों में जिस तरह शिमला में जल संकट की बात सामने आई, उसने उन जल विशेषज्ञों को भी खौफ से भर दिया, जो कई तरह के आंकड़ों के साथ पानी की उपलब्धता और उसके संकट की भविष्यवाणी करते रहे हैं। हालात ऐसे रहे कि शिमला के लोकप्रिय माल रोड तक पर पानी के लिए लोगों की कतारों में खड़ा होना पड़ा। पानी की किल्लत के कारण वहां कई होटलों को बुकिंग तक लेना बंद करना पड़ा और कई जगह बुकिंग रद्द कर दी गई। सार्वजनिक शौचालयों की भी स्थिति खराब हो गई और पानी की कमी के कारण इन्हें बंद करना पड़ा। उत्तर भारत के होटल और रेस्तरां एसोसिएशन के प्रमुख संजय सूद ने बजाप्ता बयान जारी किया- होटल मालिक पानी की कमी के कारण पर्यटकों को फिलहाल शिमला न आने की सलाह दे रहे हैं। होटलों को निजी टैंकरों से भी सप्लाई नहीं मिल पा रही है। ❑

3 पानीदार सबक

- एक टपकते नल से प्रति सेकंड एक बूंद बर्बाद होने से एक माह में 760 लीटर पानी बेकार ही बह जाता है।
- सीधे नल से नहाने पर 90 लीटर पानी खर्च होता है।
- हाथ धोकर नल ठीक तरह से न बंद करने पर एक मिनट में 30 बूंद पानी तथा वर्ष में 46 हजार लीटर पानी बेकार चला जाता है।



स से सीख, स से सिंगापुर

दुनियाभर में सैर-सपाटे के लिए सबसे पसंदीदा ठिकाने और 'बिजनेस डेस्टिनेशन' के रूप में सिंगापुर का नाम पूरी दुनिया में है। तीन दशक पहले जब पूरी दुनिया में 'डिजिटिलाइजेशन' का जोर बढ़ा तो दुनिया भर की कंपनियों ने अपने उत्पाद को यहीं से पूरी दुनिया में भेजना और प्रचारित करना सबसे बेहतर माना। पर जैसा कि आज वहां के युवाओं को भी लगता है कि सिंगापुर की एक दूसरी पहचान भी है, जो ज्यादा प्रेरक है, ज्यादा मौजू है। एक ऐसे दौर में जब जल प्रबंधन को लेकर पूरी दुनिया में तमाम तरह के उपायों की बात हो रही है, उसमें सिंगापुर की चर्चा खासतौर पर होती है। विश्व में जल प्रबंधन के जितने भी मॉडल हैं, उसमें सिंगापुर का मॉडल अव्वल है।

आने वाले चार दशकों के लिए आज सिंगापुर के पास पानी के प्रबंधन को लेकर ऐसा ब्लूप्रिंट है, जिसमें जल संरक्षण से जल शोधन तक पानी की किफायत और उसके बचाव को लेकर तमाम उपाय शामिल हैं। निस्संदेह भारत भी सिंगापुर से जल प्रबंधन को लेकर सबक ले सकता है। सिंगापुर की खास बात यह भी है कि उसका जल प्रबंधन शहरी क्षेत्रों के लिए खास तौर पर मुफीद है।



सिंगापुर के सामने लंबे समय तक यह सवाल रहा कि एक शहर-राष्ट्र जिसके पास न तो कोई प्राकृतिक जल इकाई है, न ही पर्याप्त भूजल भंडार है, जिसके पास इतनी भूमि भी नहीं कि वह बरसात के पानी का भंडारण कर सके, आखिर वह अपनी 50 लाख से ऊपर की आबादी की प्यास को कैसे बुझाए। दक्षिण पूर्वी एशियाई देश सिंगापुर का जोहार नदी (अब मलेशिया का हिस्सा) से जुड़ा 50 वर्ष पुराना अनुबंध समाप्त हो चुका है। गौरतलब है कि सिंगापुर अपनी कुल जल आपूर्ति का 40 फीसद पड़ोसी देश मलेशिया से आयात करता है। आयातित पानी का मूल्य बहुत ही कम है, क्योंकि मलेशिया ने पिछले पांच दशकों में पानी के दाम ही नहीं बढ़ाए।

इस बीच, सिंगापुर की राष्ट्रीय जल एजंसी 'पब्लिक यूटिलिटी बोर्ड' (पीयूबी) 2060 तक पानी की मांग की स्वयं पूर्ति कर पाने के लिए चौबीसों घंटे कार्य कर रही है। इसका लक्ष्य है कि वह सिंगापुर की मलेशिया पर पानी की निर्भरता को सिर्फ कम ही न करे, बल्कि उसे समाप्त भी कर दे। इसके लिए उसने जल प्राप्ति की तीन पद्धतियों पर कार्य करने का निश्चय किया है। ये हैं- गंदे पानी का पुनः शुद्धिकरण, समुद्री जल का खारापन कम करना और वर्षा जल का अधिकतम संग्रहण।

सिंगापुर में प्रतिवर्ष औसतन 2400 मिलीमीटर वर्षा होती है जो कि कुल वैश्विक औसत से दोगुनी है। इसके बावजूद यहां पानी की कमी का कारण है भंडारण के लिए स्थान की कमी। अतः पीयूबी व्यापक निवेश कर महंगे जलस्रोत विकसित कर रहा है। सत्तर के दशक में सिंगापुर ने गंदे जल का पुनर्शोधन प्रारंभ कर दिया था। वर्षा जल का अधिकतम प्रयोग करने हेतु पीयूबी ने अपनी तरह का पहला संयंत्र समुद्र तट पर लगाया है, जो कि छोटी धाराओं के माध्यम से आने वाले पानी के शोधन में सक्षम है।

2003 में सिंगापुर का एक नागरिक प्रतिदिन 165 लीटर पानी का इस्तेमाल करता था। 2009 में यह घटकर 155 लीटर पर आ गया। जागरूकता अभियान के माध्यम से पीयूबी चाहता है कि अगले तीन साल में इसमें आठ लीटर की और कमी आ जाए। सिंगापुर का लक्ष्य है कि वह 2060 तक पानी के मामले में आत्मनिर्भर बन जाए तब तक मलेशिया उसके लिए पानी का मुख्य स्रोत बना रहेगा। ❑

मुख्यमंत्री आवास का कप

कहानी

अरविंद तिवारी

कालू ने जब अपनी वेतन की स्लिप देखी, तो उसे समझ में नहीं आया कि पचास रुपए उसके वेतन से क्यों कटे। बैंक से वह पूरा वेतन निकाल लाया, पर पचास रुपए की कटौती उसे साल रही थी। चतुर्थ श्रेणी कमर्चारी के लिए पचास रुपए मायने रखते थे। उसने देखा था कि मुख्यमंत्री आवास पर जो पीए बैठता था, लोग उसकी जेबें नोटों से भर देते थे। उन्हें अपने केस की फाइल में सिर्फ मुख्यमंत्री के हस्ताक्षर चाहिए होते थे। खुद मुख्यमंत्री की संपत्ति में दो वर्ष के दौरान पचास गुना इजाफा हो गया था, ऐसे आरोप विपक्ष लगा चुका था, जो बड़े-बड़े अखबारों में भी छपे थे। मुख्यमंत्री आवास में होते हुए भी कालू को कभी किसी ने 'टिप' नहीं दी थी, जबकि उसने तरह तरह के मेहमानों के चाय-नाश्ता कराया था। टिप नहीं मिली कोई बात नहीं, पर मेहनत की जो तनख्वाह मिल रही है, उसमें से भी कटौती! पचास रुपए बाबुओं, अफसरों और मंत्रियों के लिए कुछ नहीं होते, पर कालू जैसे चतुर्थ श्रेणी के कमर्चारी के लिए बहुत कुछ होते हैं। पचास रुपए में गुड़िया की चप्पल आ जाती। पचास रुपए में पत्नी के ब्लाउज का कपड़ा आ जाता।

मुख्यमंत्री आवास पर काम करते हुए कालू को पंद्रह साल हो गए। इन पंद्रह सालों में छह मुख्यमंत्री उसने देख लिए। कुछ तो इतने भले थे कि रोज उसका हाल-चाल पूछते और यह भी कहते कि कोई काम हो तो बताना। कालू ने अपने गांव के फतेसिंह का तबादला मुख्यमंत्री जी से कहकर गृह जिले में करवा दिया था। फतेसिंह ठाकुर थे, जबकि कालू कुशवाह। गांव में ठाकुरों का दबदबा था। कई तरह के दबावों में पिछड़ी जातियां रह रहीं थीं। कालू, फतेसिंह से उम्र में बड़ा था, पर खुद ही अपनी ओर से 'जोहार' करता था। पर तबादला हो जाने के कारण अचानक फतेसिंह का व्यवहार बदल गया था।

पिछली दीपावली पर जब कालू गांव गया तो फतेसिंह ने सबके सामने उसके पैर छू लिए थे। ठकुराइन भड़क गई थी। शाम को दारू पीकर फतेसिंह ने अपनी बिरादरी को गरियाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी।

'अरे नामर्दों तुम काहे के ठाकुर हो। जाटव मंत्री से काम निकलवाने के लिए उसके पैर छू लेते हो। वह युवा मंत्री तुम्हारे बेटों की उम्र का है। मैंने गांव के कालू भैया के पैर छू लिए तो तुम्हारी नाक कट गई।...'

'तुम्हारी नाक उस समय नहीं कटी जब ठाकुर की बेटी खटीक के बेटे के साथ भाग गई थी।'

ठाकुरों ने समझ लिया आज फतेसिंह उनके पुरुखों की इज्जत मिट्टी में मिला कर रहेगा। ठाकुरों ने फतेसिंह से मांफी मांगकर उसे घर के भीतर कर दिया।

मुख्यमंत्री अलग-अलग स्वभाव के होते हैं। एक मुख्यमंत्री तो कालू की पत्नी पर ही बुरी नजर रखने लगा था। कालू समझ गया और पत्नी को गांव भेजकर खुद अस्पताल में भर्ती हो गया। अस्पताल से लौटकर तीन महीने की छुट्टी पर चला गया। इन तीन महीनों में ही उस रसिया मुख्यमंत्री की छुट्टी हो गई थी।

कालू की पत्नी को जब पता चला कि कालू के वेतन से पचास रुपए कट गए, तो वह मुख्यमंत्री आवास के अफसरों और बाबुओं को कोसने लगी। 'नाशपीटो! तुम्हारे कीड़े पड़ें! तुम्हारे वंश का नाश हो। पचास रुपए काट लेते हो तो गू क्यों नहीं खा लेते।' कालू ने किसी तरह से उसे चुप कराया।

दूसरे दिन उसने बिल बनाने वाले बाबू से संपर्क किया। बाबू पहले तो कालू से बेगार करवाता रहा, फिर जानकारी दी, 'पिछले महीने तुम्हारे हाथ से जो चाय का कप टूट गया था, उसकी रिकवरी के पचास रुपए कटे हैं। मुख्यमंत्री आवास का कोई कप सौ रुपयों से कम का नहीं है, इसलिए खैर मनाओ कि रिकवरी सौ रुपयों की नहीं हुई है।' कालू ने भोलेपन से पूछा, 'बाबूजी सही-सही बताना, सरकारी निवास, सर्किट हाउस आदि में कभी कप नहीं फूटे। अगर फूटे तो क्या उनकी भी रिकवरी होती रही है।'

बाबू मुस्कराते हुए बोले, 'देखो कालू! अगर कप फूटेंगे नहीं, तो कप बनने वाली फैक्ट्रियां बंद हो जाएंगी। इसलिए राज्य के विकास के लिए कपों का फूटना अपरिहार्य है। अगर फोर्थ क्लास से नहीं फूटे, तो अधिकारी अपने हाथ से फोड़ देंगे, क्योंकि हर साल उनकी खरीद भी तो होनी है वरना बजट लैप्स हो जाएगा। रही बात रिकवरी की तो यह पहली बार हो रहा है कि फोर्थ क्लास से रिकवरी हो रही है। दिल्ली का आदेश है कि खर्चों पर लगाम लगाई जाए, उसी निर्देश के तहत तुम्हारी रिकवरी की गई है। मुख्यमंत्री इस मामले में सख्त हैं।'

कालू मुख्यमंत्री आवास की शानो-शौकत देख चुका था। रोज-रोज छप्पन भोग बनते थे। उनमें कोई कटौती नहीं, पर फोर्थ क्लास से कप फूटने पर रिकवरी! उसे महात्मा गांधी और शहीदों पर गुस्सा आ रहा था, ऐसी आजादी के लिए वे कुर्बान हो गए! पंद्रह साल की नौकरी में उसने बीसियों कप फोड़े होंगे। मगर कभी उनकी कीमत की वसूली नहीं हुई। आठवीं पास कालू यह नहीं समझ पा रहा था, पचास रुपयों से दिल्ली के आदर्शों को कैसे प्राप्त किया जा सकता है।

इस घटना को बीस दिन बीत गए। कालू का मन काम में नहीं लगता था। सावधानी कितनी भी रखो क्राकरी टूटती ही है। इसी तरह वेतन से कटौती होती रही तो घर कैसे चलेगा। जब कालू का तनाव कम नहीं हुआ तो उसने अपने मन की बात, गोपी को बता दी। मुख्यमंत्री आवास में गोपी ही ऐसा फोर्थ क्लास था, जो कालू के दुख-दर्द में काम आता था। गोपी तीस सालों से मुख्यमंत्री आवास में था और रिटायर होने वाला था। उसने कई दलों के मुख्यमंत्री देखे थे। गोपी आज भी विपक्षी नेताओं के मुंह लगा था। गोपी ने कप के दाम वसूली की सूचना विपक्ष के बड़े नेता को दे दी।

छुट्टी के बाद एक दिन जब कालू मुख्यमंत्री आवास में बने अपने 'हाउस हट' में पहुंचा तो वहां तीन पत्रकार उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। पत्रकार उसकी पे-स्लिप की कॉपी चाहते थे। वे बार-बार पचास रुपए की रिकवरी की बारे में पूछ रहे थे, लेकिन कालू कुछ भी बताने को तैयार नहीं था। एक पत्रकार ने कालू को उसकी बेटी गुड़िया की कसम दे दी, तो उसे सच बताना पड़ा। कालू के गांव में कसम का बहुत महत्व था, साथ ही गंगाजली का भी। हालांकि गांव के रसूखदार लोग गंगाजली के सहारे झूठ भी बोलते थे, पर कालू कसम और गंगाजली दोनों को मानता था।

दूसरे दिन राज्य के प्रमुख अखबारों में कालू की रिकवरी के चर्चे थे। विपक्ष के नेताओं से लेकर आम आदमी तक मुख्यमंत्री को दोषी बता रहा था। पत्रकारों ने कालू पर इतनी कृपा जरूर की कि उसका फोटो अखबारों में नहीं छापा। मुख्यमंत्री को जब इस विरोध और अखबारबाजी का पता चला तो उन्होंने कालू को सस्पेंड कर दिया। कालू ने बहुत हाथ-पांव जोड़े, पर मुख्यमंत्री जी नहीं पिघले। कालू के निलंबित होने और उसके पीछे कप फूटने की कहानी राष्ट्रीय अखबारों में भी छप गई।

आयोग के कार्यक्षेत्र में कप के निर्माण की प्रक्रिया से लेकर कालू के हाथ से कप गिरने तक का विस्तृत जांच क्षेत्र था। इस संबंध में उस कप फैक्ट्री के मालिक को समन भेजा गया, जिसके यहां कप बना था। फैक्ट्री का मालिक घबरा गया। जब आयोग ने फैक्ट्री से कप के रॉ मेटेरियल का सैंपल मांगा, तो फैक्ट्री के मालिक को दिल का दौरा पड़ गया। किसी तरह डॉक्टरों ने उसे बचा लिया। इस बीच, आयोग के अध्यक्ष और सदस्यों ने राजधानी के पॉश इलाके में नए फ्लैट खरीद लिए। छह माह पूरे होने के बाद भी आयोग ने सरकार को अपनी रिपोर्ट नहीं दी, तो सरकार ने मजबूरी में आयोग का कार्यकाल छह माह और बढ़ा दिया।



उन दिनों राज्य में शांति थी। न कहीं मॉब लिंचिंग हो रही थी और न कहीं दंगा। न बाढ़ आई थी और न अकाल पड़ा था। न कहीं बंद बुलाया जा रहा था और न हड़ताल हो रही थी। बलात्कार में अव्वल रहने वाले उस राज्य में उन दिनों बलात्कारी छुट्टी पर चल रहे थे। जाहिर है कि विपक्ष को बैठे-बिठाए कालू का मुद्दा मिल गया। विपक्षी नेताओं ने कालू की पीठ ठोंकी और उसे दिलासा दिया कि पूरे राज्य की जनता तुम्हारे साथ है। बड़े आंदोलन की रूपरेखा तैयार हो गई। मुख्य विपक्षी दल जो राज्य में अपनी प्रासंगिकता खो चुका था, अचानक हरकत में आ गया।

दूसरे दिन राजधानी के रामलीला मैदान में विशाल रैली हुई, जिसमें सभी विपक्षी दल एक साथ खड़े देखे गए। सियासी दलों के अलावा राज्य कर्मचारी यूनियन के नेता भी उस रैली में शामिल थे। राज्य भर के कर्मचारी बसों में भरकर रैली स्थल पर पहुंचे थे। इसके बाद पूरे राज्य के कर्मचारी हड़ताल पर चले गए। कप की रिकवरी का मुद्दा और कालू का निलंबन देश-विदेश के मीडिया की सुर्खियां बन गया। अन्य राज्यों के कर्मचारियों ने भी कालू के समर्थन में एक दिन की सांकेतिक हड़ताल कर दी। मुख्यमंत्री की पार्टी के असंतुष्ट नेता आलाकमान से मुख्यमंत्री की शिकायत करने दिल्ली कूच कर गए। आलाकमान ने मुख्यमंत्री को तत्काल दिल्ली तलब कर लिया।

मुख्यमंत्री जब दिल्ली से लौटे तो उनका मुंह लटका हुआ था। इस बार वे अपने निवास के अदना से कमर्चारी से मात खा गए थे। दिल्ली से लौटकर उन्होंने कालू के निलंबन को रद्द करते हुए उसे नौकरी पर बहाल कर लिया और मंत्रिमंडल की एक उपसमिति बना दी, जो कालू के प्रकरण की जांच करेगी। इस जांच में उन परिस्थितियों का भी पता लगाया जाएगा, जिनके बरक्स मुख्यमंत्री आवास का कीमती कप टूटा था। यदि कालू दोषी नहीं पाया गया तो उसके पचास रुपयों की कई गई रिकवरी रद्द कर दी जाएगी। कालू को पचास रुपए लौटा दिए जाएंगे।

कमर्चारी नेताओं ने आंदोलन वापस नहीं लिया। उनका तर्क था कि राज्य के सभी मंत्री मुख्यमंत्री के चमचे हैं, अतः कालू के साथ न्याय नहीं हो पाएगा। सचिवालय से लेकर जिलाधिकारी के दफ्तर के सामने घटना प्रदर्शन बदस्तूर जारी था। तीन दिनों तक मुख्यमंत्री जी को नींद नहीं आई। ऐसा ऊहापोह तब भी नहीं था, जब उन्हें मुख्यमंत्री पद की शपथ से पहले अपनी ही पार्टी के नेताओं का विरोध झेलना पड़ा था। वे दौड़े-दौड़े फिर दिल्ली गए। हाईकमान ने उन्हें सख्त संदेश दिया कि कालू वाली समस्या खुद सुलझाओ या फिर कुर्सी छोड़ने के लिए तैयार रहो।

अगले ही दिन राज्य की राजधानी में एक बड़ा पत्रकार सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें मुख्यमंत्री ने कालू की रिकवरी के पचास रुपए तत्काल लौटाने की घोषणा की। रिकवरी के पैसे किससे वसूले जाएं, इस बाबत मुख्यमंत्री ने पूर्व न्यायाधीश की अध्यक्षता में एक आयोग भी गठित कर दिया। आंदोलन समाप्त हो गया, लेकिन कालू को पचास रुपए प्राप्त करने से पहले एक शपथपत्र पर हस्ताक्षर करने पड़े; जिसमें लिखा था यदि कप फोड़ने के लिए आयोग कालू को जिम्मेदार मानेगा, तो उसे पचास रुपए जमा कराने होंगे।

आयोग के कार्यक्षेत्र में कप के निर्माण की प्रक्रिया से लेकर कालू के हाथ से कप गिरने तक का विस्तृत जांच क्षेत्र था। इस संबंध में उस कप फैक्ट्री के मालिक को समन भेजा गया, जिसके यहां कप बना था। फैक्ट्री का मालिक घबरा गया। जब आयोग ने फैक्ट्री से कप के रॉ मेटेरियल का सैंपल मांगा, तो फैक्ट्री के मालिक को दिल का दौरा पड़ गया। किसी तरह डॉक्टरों ने उसे बचा लिया। इस बीच, आयोग के अध्यक्ष और सदस्यों ने राजधानी के पॉश इलाके में नए फ्लैट खरीद लिए। छह माह पूरे होने के बाद भी आयोग ने सरकार को अपनी रिपोर्ट नहीं दी, तो सरकार ने मजबूरी में आयोग का कार्यकाल छह माह और बढ़ा दिया।

अगले छह माह रिपोर्ट को फेयर करने में बीत गए। डेढ़ साल बाद आयोग ने सरकार को अपनी रिपोर्ट पेश कर दी। एक संवाददाता सम्मेलन में मुख्य सचिव ने आयोग की रिपोर्ट को सार्वजनिक कर दिया। इस रिपोर्ट में कप निर्माण की प्रक्रिया से लेकर मुख्यमंत्री निवास की कप खरीदने की प्रक्रिया में कोई खामी नहीं थी। अतः कप फूटने के प्रकरण में कालू को उत्तरदायी ठहराया गया। ❑

रोटी, कपड़ा और मकान का नया शास्त्र

व्यंग्य

सुरेश सेठ

बहुत पहले ही रोटी, कपड़ा और मकान देने का शास्त्र पढ़ाने वाले चिंतकों ने यह कह दिया था कि मात्र इच्छा रखने से ही तुष्टि नहीं हो जाती। तब एक शब्द चित्र का उपहार भी हमें इन विज्ञजनों ने दिया था कि अगर कहीं इच्छाएं घोड़े बन जातीं तो सब भिखारी उन पर चढ़ कर शहसवारी करते नजर आते। लेकिन हमारी विडंबना ही यह रही कि हमारी इच्छाएं कभी हमारे लिए एक उड़ने वाला घोड़ा तो क्या एक लकड़ी का घोड़ा भी न दे सकीं। देश के बड़े सेवकों ने जुमलों की सहायता से उड़ने वाले हवाई घोड़ों से मुफ्त लंगर बांटने का बहुत ताम-झाम किया। जब-जब किसी इलाके में चुनावी दुंदुभि बजती तो हवाई घोड़े बांटने वाले ये सौदागर हमारी गलियों में तशरीफ ले आते। हम बरसों से जिन बंद कपाटों पर दस्तक देते हुए अपने लिए सांसों की खैरात मांग रहे थे, उन कपाटों के खुलने का आभास होता। प्राचीरों की खिड़कियां चंद देर के लिए खुलतीं और वहां से सपनों की बरसात होने लगती। आइए, इन सपनों की खोज-तलाश करें। इन सपनों में रोटी की बात नहीं होती, मालपुओं की बात होती है। खिचड़ी की बात नहीं होती, हलवे की बात होती है। बात ही करनी है तो क्यों न ऊंची उड़ान भरी जाए? जैसे यह कह दिया जाता है कि हम इस धरती के जीव कल को चंद्र ग्रह या मंगल ग्रह पर अपनी बस्तियां बसाएंगे। आइए, आज ही इनका आरक्षण करवा लें। कोई नहीं सोचता कि आसमां पर जो खुदा है, वह हम जमीं वासियों की ओर आजकल देखना बंद कर चुका है। सड़कें टूट गईं। लेकिन हम आज भी मंगल ग्रह पर बस्तियां बसाने की सोच रहे हैं। घर-बार का ठिकाना नहीं और अंतरिक्ष की सैर को निकल जाना चाहते हैं। अपनी खेती-बाड़ी में बाबा आदम के तरीकों से छुटकारा नहीं पा सके और इसरो-इसरो चिल्लाकर दुनियाभर को छका देना चाहते हैं और सपनों का भी कोई अंत होता है।

कभी हमें कहा जाता कि आप में से हर सड़क छाप आदमी का एक बैंक खाता होगा। इसमें सीधी सरकारी खैरात ही नहीं आएगी, बरसों से जो कालाधन करोड़ों और अरबों की तादाद में विदेशी बैंकों के गुप्त खानों में छिपाया जाता रहा, उसे वापस लाया जाएगा। खुल जा सिम-सिम के अंदाज में जब आप एक नई सुबह अपने बैंक खाते की पासबुक खोलेंगे, तो उसमें आपको लाखों रुपए जमा नजर आएंगे। बरस दर बरस बीत गए। कालाधन पहलू बदल कर एक देश के गुप्त विदेश खातों से छोटे, देशों के बैंकों के खाते में जा छिपा। टैक्स स्वर्ग के नाम से इन बैंकों के कुकरमुत्ते इन देशों में उग आए और अपने देश में तो एक छदाम भी वापस नहीं आ सका।

गरीब का खाता उसी तरह गरीब और वंचित रहा। जब खाता खाली और मृत तो उस पर घोषित जीवित बीमे का लालीपॉप उसे कैसे मिल जाता? न लालीपॉप मिला और न लैमनचूस। हालत यह कि गरीब के खाते बंद होने की नौबत आ गयी, जब धन ही नहीं तो कैसा जनधन। कभी जिन्हें खोलकर गरीबों के लिए बैंक क्रांति का भरोसा दिया गया था, वह भरोसा तो एक भ्रांति बन गया, और जनधन खाते एक भूली-बिसरी निष्क्रिय घोषणा। बिल्कुल उसी तरह जैसे यह समझ कि जुमले केवल लुभावने पारदर्शी सपनों का जाल रचते हैं। करोड़ों की संख्या में नई नौकरियां बांट देने का जुमला जो स्वचालित मशीनों की आमद के सामने दम तोड़ता हुआ नजर आया है।

उदारता से सस्ते कर्ज बांट देने का जुमला जो मुद्रा बैंक कहलाया था। अरे, वह तो आपको इतना भी न दे सका कि आप उसके साथ अपने लिए पकौड़े तलकर बेचने का कोई काम ही शुरू कर लेते। फिर भैया कितने लोग पकौड़े तलेंगे? गरीब के लिए तो रोटी पर प्याज रखकर खाना भी दुर्लभ हो गया और आप उसे पकौड़े तल कर बेचने और खाने का संदेश दे रहे हैं। क्या यह बेहतर न होता कि इस देश की सदियों पुरानी महानता का ढोल-नगाड़ा पीटने वाले, इस देश के दस्तकारों को नया जीवनदान दे देते। हमने तो कभी सुना था कि ढाका में ऐसे-ऐसे मलमल बनाने वाले बुनकर थे, जो मलमल के थान को एक डिबिया में बंद कर देते। अब तो न वे डिबियां रहीं और न ऐसे बुनकर। आइए, उन कारीगरों की तलाश करें जिन्होंने कभी इस शाहजहां के लिए ताजमहल रच दिया था और बादशाह ने उनके अंगूठे कटवा दिए। उसकी रौ पर चले अंग्रेज हम पर शासन करने आए। तो अपनी लंकशायर और बकिंघम की मिलें चलाने के लिए हमारे हाथ काट गए। अब इन बड़ी-बड़ी स्वचालित मशीनों को चलाने वाले इन धनपतियों ने सरकारी छतरी की बदौलत अपनी बहुराष्ट्रीय इकाइयां बना लीं हैं और कल का दुनिया भर को चौंका देने वाला दस्तकार अपनी कला-कौशल के हाथ कटवा कर पकौड़े बनाने के लिए बेसन छानता नजर आया।

पकौड़े न बना पाओ, तो नाकों, चौराहों पर भिखारी की वर्दी पहन कर भीख मांगने का व्यवसाय अपना लो। सुना है, अब तो यह कुटीर उद्योग अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विकसित हो गया है। बिल्कुल उसी तरह जैसे मादक द्रव्यों की तस्करी और नकली नोटों के प्रचलन का धंधा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विकसित हो गया है। हम 'गरीबी भगाने, जीवन जगाने' का संदेश तो विश्व क्या अपने देश को भी न दे सके, हां आतंकवाद ने 'वसुधैव कुटम्बकम' का मूलमंत्र हमें अवश्य उपहार में दे दिया। अब इसके तार विदेशों में हिलते हैं और दरो-दीवार हमारे देश में कांपने लगते हैं। लेकिन यह भी तो एक कुटीर उद्योग है। पढ़ा-लिखा नौजवान अपने शिक्षा के बोझ से आक्रांत हो, तो क्यों न एके सैंतालीस पकड़ कर फेसबुक पर तस्वीर डाल दे। यह भी एक वारे-न्यारे करने वाला धंधा बन जाएगा। बंधु। ❑

इन सपनों में रोटी की बात नहीं होती, मालपुओं की बात होती है। खिचड़ी की बात नहीं होती, हलवे की बात होती है। बात ही करनी है तो क्यों न ऊंची उड़ान भरी जाए? जैसे यह कह दिया जाता है कि हम इस धरती के जीव कल को चंद्र ग्रह या मंगल ग्रह पर अपनी बस्तियां बसाएंगे। आइए, आज ही इनका आरक्षण करवा लें।



www.readwhere.com

भगत सिंह होने का मतलब

संगीता सहाय



भगत सिंह होने का मतलब सिर्फ गोली-बंदूक के माध्यम से और खुद का बलिदान देकर आजादी पाना भर नहीं है। भगत सिंह की चिंता और चेतना की दुनिया इससे कहीं ज्यादा समृद्ध है। अपनी तार्किक समझ और व्यापक अध्ययन के बूते वे हर वर्ग के लोगों के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास के साथ समतामूलक समाज की रचना के प्रति प्रतिबद्ध थे।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के क्रांति-पुरुष शहीदे आजम भगत सिंह निस्संदेह नवीन भारत के महानतम लोगों में से एक हैं। मात्र 23 वर्ष की अल्प उम्र में निर्भीकता, बौद्धिकता और विचारशीलता की नई इबारत लिखने वाला यह शख्स भारतीयों के बीच आज भी उतना ही लोकप्रिय है, जितना तब था। पर यह एक अहम तथ्य है कि भगत सिंह अपनी क्रांतिकारी छवि, विदेशी सरकार के दांत खट्टे करने वाले कारनामों और गतिविधियों के कारण भारतवासियों, विशेषकर युवाओं के बीच ज्यादा लोकप्रिय हैं। अधिकतर उन्हें अंग्रेजों के ऊपर गोली चलाने वाले निर्भीक युवा की राष्ट्रवादी की रोमांटिक छवि से परे नहीं देख पाते। इसका कारण शायद यह है कि उनकी यही छवि उस दौर के सरकारी दस्तावेजों, पत्र-पत्रिकाओं आदि में दर्ज की गई।

गौरतलब है कि भगत सिंह का मतलब अपने कारनामों से सिर्फ विदेशी हुकूमत को दहशतजदा करना और आतंक फैलाना ही नहीं था। उस अल्प आयु में जब वो बमुश्किल अपनी किशोरावस्था से बाहर ही आए थे, उसी उम्र में उनके पास देश के विकास के संदर्भ में व्यापक दृष्टिकोण था। उन्होंने एक ऐसे भारत का स्वप्न देखा था, जहां बगैर किसी जातीय और धार्मिक भेदभाव के प्रत्येक भारतवासी को सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास की सुविधा एवं सहूलियत उपलब्ध हो। उनके विभिन्न वक्तव्य, विचार, डायरी के पन्ने और सीमित अवधि में विभिन्न संदर्भों में उठाए गए कदम स्पष्टता के साथ उनकी वैचारिक व्यापकता को हमारे सामने लाते हैं। भगत सिंह का लक्ष्य एक वर्गविहीन समाज की स्थापना था और उनका अल्पकालिक जीवन उस आदर्श को समर्पित रहा। वे और उनके साथी उस समय के राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक दो मूलभूत मुद्दों को लेकर सजग थे। पहला, बढ़ती हुई धार्मिक व सांस्कृतिक वैमनस्यता और दूसरा, समाजवादी आधार पर समाज का पुनर्गठन। भगत सिंह और उनके साथियों ने भारत में समाजवाद की स्थापना के उद्देश्य से सितंबर 1928 में दिल्ली स्थित फिरोजशाह कोटला के खंडहरों में महत्वपूर्ण क्रांतिकारियों की बैठक में काफी विचार-विमर्श के बाद 'हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' (एचआरए) में सोशलिस्ट शब्द जोड़कर उसे 'हिंदुस्तान रिपब्लिकन सोशलिस्ट एसोसिएशन' (एचएसआरए) की नई पहचान दी। वे इस बात पर जोड़ देते थे कि ऐसा कोई कार्य किया जाए जिससे उनके क्रांतिकारी दल एचएसआरए का मजदूर और किसान आंदोलन के साथ घनिष्ठ संबंध प्रमाणित हो सके। उन्हें यह मौका मिला 8 अगस्त 1929 को, जब उन्होंने बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर दिल्ली स्थित असेंबली हाल में जनता विरोधी बिलों 'ट्रेड डिसप्यूट बिल' तथा 'पब्लिक सेफ्टी बिल' के विरोध में बम-धमाका किया व सरकार विरोधी पर्चे बांटे। उस समय देश की बड़ी-बड़ी हस्तियां उस हाल में उपस्थित थीं।

भगत सिंह का पहला खुला परिचय देश-विदेश की जनता को इस ऐतिहासिक बम कांड के बाद ही मिला था। इस बम कांड के बाद भगत सिंह ने बीके दत्त के साथ गिरफ्तारी दे दी। उन पर दिल्ली और लाहौर की अदालतों में मुकदमा चलाया गया। 23 मार्च 1931 को राजगुरु और सुखदेव के साथ उन्हें तय तारीख से पहले ही फांसी पर चढ़ा दिया गया। इस खबर को भारत और लंदन के साथ-साथ विश्व के अन्य देशों के अखबारों ने भी प्रमुखता से छापा। फांसी के तख्ते पर ये नौजवान क्रांतिकारी गा रहे थे - 'दिल से निकलेगी न मर कर भी वतन की उल्फत, मेरी मिट्टी से भी खुशबु-ए-वतन आएगी।'

भगत सिंह और उनके साथी अपनी अल्पायु में शोषण और साम्राज्यवाद के खिलाफ एक वीर योद्धा व महान विचारक के रूप में लड़े और अपने अमूल्य जीवन को देश के लिए समर्पित कर दिया। अपना सर्वस्व देश की बेहाल और पीड़ित जनता को अर्पित करने के बावजूद अपने प्रस्थान के वक्त भगत सिंह ने कहा था- 'मैं देश की जितनी सेवा करना चाहता था, उसका हजारवां हिस्सा भी नहीं कर सका।' भगत सिंह और उनके क्रांतिकारी साथियों ने पहली बार लोगों के समक्ष क्रांति का दर्शन रखा और बताया कि क्रांति का लक्ष्य उन तमाम व्यवस्थाओं का अंत करना है, जिसके तहत एक व्यक्ति दूसरे का शोषण करता है। उन्होंने रेल, परिवहन के अन्य साधनों तथा इस्पात और जहाज-निर्माण जैसे बड़े-बड़े उद्योगों के राष्ट्रीयकरण का भी प्रस्ताव रखा था।

क्रांतिकारी अजीत सिंह के भतीजे भगत सिंह असाधारण बुद्धिजीवी थे। उनकी समझ और विषयों पर पकड़ गहरी थी। द्वारकादास पुस्तकालय (लाहौर) में सामाजवाद, सोवियत संघ और क्रांतिकारी आंदोलन से संबद्ध तमाम किताबों का उन्होंने गहराई से अध्ययन किया था। लाहौर में सुखदेव व अन्य लोगों की मदद से उन्होंने कई अध्ययन केंद्र स्थापित किए थे, जहां राजनीतिक विषयों पर जोरदार बहस होता था। जब एचएसआरए का कार्यालय आगरा चला गया, तो वहां भी भगत सिंह ने तुरंत एक पुस्तकालय की स्थापना की। उन्होंने सहयोगियों को समाजवाद और अन्य क्रांतिकारी विचारधाराओं का अध्ययन करने और उन पर बहस करने की सलाह दी। गिरफ्तार होने के बाद उन्होंने जेल को ही विश्वविद्यालय बना दिया। जेल में रहते हुए भगत सिंह ने चार किताबें लिखीं। हालांकि वो किताबें नष्ट कर दी गईं, पर उनकी लिखी डायरी बच गई।

404 पेज की भगत सिंह की डायरी, उनकी कविताओं, संस्मरणों, देश की आजादी और उसके बाद के भारत के लिए देखे गए उनके सपनों और विचारों से भरा है। जो न केवल उनके गंभीर अध्ययन और बौद्धिक अंतर्दृष्टि को दर्शाती है, बल्कि उनकी सामाजिक और राजनीतिक चिंताओं को भी सामने लाती है। पूंजीवाद और समाजवाद जैसे विषयों से लेकर अपराध और कानूनी न्यायशास्त्र तक, उनकी डायरी में इन तमाम विषयों पर लिखे गए अंश ये दर्शाते हैं कि युवा भगत सिंह की जो आतंकवादी छवि ब्रिटिश सरकार ने दिखाई थी, वह सही नहीं थी।

व्यक्तिगत बहादुरी की कारवाइयों और आतंकवाद से भगत सिंह का विश्वास गिरफ्तारी (1929) से बहुत पहले ही उठ गया था। वे मार्क्सवादी हो चले थे और इस बात में विश्वास करने लगे थे कि व्यापक जनांदोलन से ही क्रांति लाई जा सकती है। यानी 'जनता ही जनता के लिए' क्रांति कर सकती है। क्रांतिकारी लक्ष्य प्राप्त करने में दर्शन या विचारधारा की भूमिका के महत्व को लोगों तक पहुंचाने के लिए भगत सिंह ने लाहौर कोर्ट में कहा था, 'क्रांति की तलवार में धार वैचारिक पत्थर पर रगड़ने से ही आती है।' 1929 से 1931 के दौरान अदालत में तथा अदालत के बाहर भगत सिंह तथा उनके क्रांतिकारी साथियों ने जो बयान दिए, उसका सार यह है कि क्रांति का अर्थ है क्रांतिकारी बुद्धिजीवियों के नेतृत्व में समाज के शोषित, दलित व गरीब तबकों के जनांदोलन का विकास। साम्राज्यवाद का अंत कर एक समाजवादी समाज यानी एक ऐसे समाज की स्थापना, जहां एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति का शोषण न हो।

'द फिलासफी आफ द बम' में उन्होंने क्रांति को सामाजिक, आर्थिक और राजानीतिक स्वाधीनता' के रूप में परिभाषित किया है। भगत सिंह ने अदालत में कहा था, 'क्रांति के लिए किसी बम, पिस्तौल और खूनी संघर्ष के लिए कोई जगह नहीं है। इसका सीधा अर्थ है अन्याय पर आधारित मौजूदा व्यवस्था की समाप्ति।' एक जगह उन्होंने लिखा है, 'किसानों को विदेशी शासकों के साथ-साथ जमींदारों और पूंजीपतियों से भी मुक्ति पानी है।' भगत सिंह के समाजवाद का अर्थ है, वर्ग-प्रभुत्व और पूंजीवाद का पूरी तरह से खात्मा।

भगत सिंह सांप्रदायिकता, अंधविश्वास आदि को उपनिवेशवाद के जितना ही खतरनाक मानते थे। उनके अनुसार धर्म व्यक्ति का निजी मामला है। अतः इस विषय पर जनता के बीच समझ और सहनशीलता की भावना विकसीत करना आवश्यक है। उन्होंने अंधविश्वास की जकड़न से जनता को मुक्त करने पर बहुत जोड़ दिया। अपने लेख 'मैं नास्तिक क्यों हूं' में उन्होंने लिखा है, 'प्रगति के लिए संघर्षशील किसी भी व्यक्ति को अंधविश्वासों की आलोचना करनी ही होगी और पुराणपंथी विचारों को चुनौती देनी ही होगी। प्रत्येक प्रचलित विश्वासों की हरेक कड़ी की प्रासंगिकता और सत्यता को परखना ही होगा।'

अंततः कहा जा सकता है कि भगत सिंह होने का मतलब सिर्फ गोली-बंदूक के माध्यम से और खुद का बलिदान देकर आजादी पाना भर नहीं था। बल्कि भगत सिंह होने का मतलब था उच्च वैचारिकता, विद्वता, अध्ययन-वृति और समझ से पूरे देश में राष्ट्रीय चेतना का संचार करना, राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष को एक नई दिशा देना। इसके साथ अपने अनन्य राष्ट्रप्रेम, अदम्य साहस, अटूट प्रतिबद्धता और गौरवमय बलिदान के द्वारा भारतीय जनता के लिए प्रेरणा-स्रोत बनना और समाज के हर वर्ग के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास एवं एक समतामूलक समाज के निर्माण के लिए आजीवन संघर्ष करना। ■

शख्सियत

उषा मेहता



जन्म : 25 मार्च 1920
निधन : 11 अगस्त 2000

उषा मेहता एक गांधीवादी और स्वतंत्रता सेनानी थीं। उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई थी। उषा मेहता को 'कांग्रेस रेडियो' के आरंभ और संचालन के लिए याद किया जाता है। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उन्होंने खुफिया तरीके से 'कांग्रेस रेडियो' शुरू किया था और खासी ख्याति बटोरी थी।

आजादी का पाठ

उषा मेहता का जन्म सूरत के सरस गांव में हुआ था। महज पांच वर्ष की उम्र में ही उनका परिचय महात्मा गांधी से हुआ। एक बार जब बापू ने सरस गांव के समीप शिविर का आयोजन किया तब उन्होंने इसमें भाग लिया। खिलौने से खेलने की उम्र में उषा आजादी का पाठ पढ़ने लगी थीं। मात्र आठ साल की उम्र में उन्होंने 'साइमन गो बैक' विरोध प्रदर्शन में हिस्सा लिया और अंग्रेजों के खिलाफ आवाज बुलंद की। हालांकि ब्रिटिश शासन के दौरान जज रहे उनके पिता ने स्वतंत्रता की लड़ाई का हिस्सा बनने से उन्हें रोकने की कोशिश की लेकिन वे नहीं मानीं। 1930 में पिता के सेवानिवृत्त हो जाने के बाद यह बाधा भी दूर हो गई। पिता के सेवानिवृत्त हो जाने के बाद उनका पूरा परिवार बंबई आ गया, तब वह बारह साल की थीं। इसके बाद ही उन्होंने खादी पहनने और स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने का प्रण किया।

शिक्षा

उनकी प्रारंभिक शिक्षा खेड़ा, भरूच और फिर चंदारामजी हाई स्कूल, बंबई में हुई। उन्होंने बंबई के ही विल्सन कॉलेज से दर्शनशास्त्र में स्नातक की डिग्री हासिल की। कानून की पढ़ाई भी शुरू की, लेकिन 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल होने के लिए पढ़ाई छोड़ दी। 22 साल की उम्र में स्वतंत्रता आंदोलन में उतर आईं।

खुफिया रेडियो का संचालन

14 अगस्त 1942 को उषा मेहता ने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर 'खुफिया कांग्रेस रेडियो' की स्थापना की। इस खुफिया रेडियो सेवा का पहला प्रसारण 27 अगस्त 1942 को हुआ। इस रेडियो से पहला प्रसारण भी उनकी आवाज में ही हुआ था। पहले प्रसारण में उषा मेहता ने धीमी आवाज में रेडियो पर घोषणा की- ये कांग्रेस रेडियो की सेवा है, जो 42.34 मीटर पर भारत के किसी हिस्से से प्रसारित की जा रही है। आजादी के आंदोलन को आवाज देने के लिए कांग्रेस रेडियो शुरू हो चुका था। कांग्रेस रेडियो के साथ डॉ राममनोहर लोहिया, अच्युतराव पटवर्धन और पुरुषोत्तम जैसे वरिष्ठ नेता भी जुड़ चुके थे। कांग्रेस रेडियो पर महात्मा गांधी और कांग्रेस के दूसरे बड़े नेताओं के संदेश बजाए जाते थे। ब्रिटिश हुकूमत की नजरों से बचाने के लिए इस खुफिया रेडियो सेवा के स्टेशन करीब-करीब रोज बदले जाते थे।

तमाम कोशिशों के बावजूद खुफिया कांग्रेस रेडियो सेवा को ज्यादा दिनों तक नहीं चलाया जा सका और तीन माह के प्रसारण के बाद 12 नवंबर, 1942 को ब्रिटिश हुकूमत ने उषा मेहता और उनके सहयोगियों को गिरफ्तार कर लिया। खुफिया रेडियो चलाने के कारण उन्हें चार वर्ष की जेल हुई। जेल में उनका स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। बाद में 1946 में उन्हें रिहा किया गया।

मुंबई विश्वविद्यालय में अध्यापन

स्वतंत्रता के बाद उन्होंने गांधी के सामाजिक एवं राजनीतिक विचार पर पीएचडी की और मुंबई विश्वविद्यालय में अध्यापन आरंभ किया। वे मुंबई विश्वविद्यालय के साथ लंबे समय तक जुड़ी रहीं, कभी विद्यार्थी के रूप में तो कभी शोध सहायक के रूप में तो कभी व्याख्याता तो कभी प्रोफेसर के रूप में। बाद में वे नागरिक शास्त्र एवं राजनीति विभाग की प्रमुख भी बनीं। 1980 में मुंबई विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त हुईं। गांधीवादी विचार और दर्शन को जन-जन तक पहुंचाने में भी उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। इसके लिए उन्होंने अंग्रेजी, गुजराती और अपनी मातृभाषा में कई लेख, निबंध और किताबें लिखीं। उन्हें गांधी स्मारक निधि का अध्यक्ष चुना गया। वे गांधी शांति प्रतिष्ठान की अध्यक्ष भी रहीं।

सम्मान

उन्हें 2008 में देश के दूसरे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था। ■

रंग-ए-दोप्याजा

जिन सब्जियों में प्याज को दो तरह से उपयोग में लाया जाता है उन्हें दोप्याजा कहते हैं। बहुत सारी सब्जियों से दोप्याजा बनाया जाता है। खासकर हरी सब्जियों का दोप्याजा खाने में बहुत आनंददायक होता है। इसमें कचकचापन भी होता है और हर सब्जी का अपना अलग-अलग स्वाद बना रहता है। इस बार कुछ दोप्याजा बनाते हैं।

दाना-पानी

मानस मनोहर

भिंडी दोप्याजा

यह भिंडी का मौसम है। होली के बाद भिंडी की ताजा सब्जी बाजार में आनी शुरू हो जाती है, फिर पूरी गरमी इसका मौसम बना रहता है। भिंडी की सब्जी सभी को पसंद है। बच्चे खासकर इसे पसंद करते हैं। इसकी गिनती रेशेदार सब्जियों में होती है। यह पेट को साफ रखने में काफी मददगार है। मगर भिंडी बनाने के कुछ ही तरीके हैं, जो हर घर में इस्तेमाल किए जाते हैं। कोई इसे बेसन के साथ बनाता है, तो कोई सीधे छौंक कर सूखी सब्जी बना लेता है। कुछ लोग आलू के साथ मिला कर बनाते हैं, तो कुछ लोग प्याज के। मगर भिंडी का दोप्याजा लाजवाब बनता है। इसे बनाना भी आसान है।



भिंडी जब भी बनाएं, पहले अच्छी तरह धोकर कपड़े से पोंछ कर सुखा लें। फिर इसे मनचाहे आकार में काट लें। दोप्याजा बनाने के लिए भिंडी को थोड़े बड़े आकार में ही काटें। फिर इसमें थोड़ी-सी कुटी लाल मिर्च, थोड़ा-सा हल्दी पाउडर और थोड़ा-सा धनिया पाउडर डाल कर अच्छी तरह मिला लें। इसे अलग रख दें। इसी तरह प्याज के चार-छह टुकड़े काट कर उसकी परतों को अलग-अलग कर लें। अगर प्याज को चौकोर काटें तो देखने में अच्छा लगता है। इसी तरह एक या दो बड़े टमाटर को चौकोर टुकड़ों में काट लें और उसका गूदा निकाल कर अलग रख दें।

अब इसके लिए अलग से एक-दो प्याज और एक टमाटर बारीक काट लें। टमाटर के साथ पहले वाले टमाटर का गूदा भी मिला लें। इसमें डालने के लिए कुछ हरी मिर्चें और थोड़ा अदरक भी बारीक काट लें। एक कड़ाही में दो-तीन चम्मच तेल गरम करें। आंच तेज रखें और उसमें पहले भिंडी को डाल कर चलाते हुए दो-तीन मिनट के लिए भूनें। फिर बाहर निकाल कर ठंडा होने रख दें। इसी तरह तेज आंच पर बड़े आकार के प्याज और टमाटर को भी दो मिनट के लिए अलग-अलग भूनें और भिंडी के साथ ठंडा होने के लिए रख दें। फिर उसी कड़ाही में जीरा, सौंफ, अजवाइन और हींग का तड़का दें और बारीक कटे प्याज-टमाटर को छौंक दे। आंच धीमी कर दें और इन्हें चलाते हुए तेल छोड़ने तक भूनें। जब प्याज-टमाटर तेल छोड़ दे, तो उसमें आधा चम्मच धनिया पाउडर, आधा चम्मच जीरा पाउडर, आधा चम्मच लाल मिर्च पाउडर और आधा चम्मच खटाई डाल कर थोड़े-से पानी के साथ अच्छी तरह मिला लें। अब इसी में तली हुई भिंडी, प्याज और टमाटर डालें और जरूरत भर का नमक डाल कर चलाते हुए सारे मसाले को अच्छी तरह मिला लें। तीन से चार मिनट तक पकाने के बाद आंच बंद कर दें। लो तैयार हो गया भिंडी दोप्याजा।

सोया चंक दोप्याजा

सोया चंक यानी सोयाबीन की बड़ियां तो रसेदार सब्जी, पुलाव वगैरह में डाल कर अक्सर लोग खाते हैं, पर इसका दोप्याजा बना कर खाएं, तो इसका मजा अलग ही होता है। इसका दोप्याजा बनाने के लिए थोड़ी-सी मशक्कत करनी पड़ती है। यह मशक्कत सोया चंक को तैयार करने में ही लगती है। सोया चंक को थोड़ी देर पानी में हल्का नमक डाल कर उबालें और जब ये नरम हो जाएं तो आंच बंद कर दें। पानी ठंडा हो जाए, तो सोया चंक को निकाल कर हथेली पर रख कर दबाएं और उसका पीनी निकाल दें। दबाते समय ध्यान रखें कि ज्यादा जोर न लगाएं। अब इन बड़ियों में थोड़ा-सा मैदा, थोड़ा-सा नमक, कुटी लाल मिर्च और धनिया पाउडर डाल कर पानी का छींटा देकर इस तरह तरह मिला लें कि मैदे की परत पूरी बड़ियों पर अच्छी तरह चिपक जाए। इसे अलग रख दें।

दोप्याजा के लिए जिस तरह भिंडी में डालने के लिए कुछ बड़े आकार में और कुछ महीन आकार में प्याज-टमाटर काटे थे, वैसे ही इसके लिए भी काटें। इसमें डालने के लिए कुछ लहसुन की कलियां और थोड़ी अदरक कूट कर पेस्ट बना लें।

अब एक कड़ाही में तेल गरम करें उसमें सोया चंक को सुनहरा तल कर निकाल लें। फिर बड़े आकार में कटे प्याज और टमाटर को तेज आंच पर दो-दो मिनट के लिए तल कर बाहर निकाल लें। अब उसी कड़ाही में एक चम्मच तेल रख कर जीरा, अजवाइन और सरसों का तड़का दें। उसमें बारीक कटे प्याज, टमाटर और लहसुन-अदरक के पेस्ट को तेल छोड़ने तक भून लें। फिर धनिया पाउडर, धनिया पाउडर, लाल मिर्च पाउडर डालें अच्छी तरह भून लें। हल्का पानी डाल कर अच्छी तरह पका लें। जरूरत भर का नमक डालें। फिर इसमें तले हुए सोया चंक, प्याज और टमाटर डाल कर अच्छी तरह मिलाएं। तीन से चार मिनट तक पकाएं और फिर आंच बंद कर दें। इस सोया चंक दोप्याजा को रोटी, परांठे आदि के साथ भी खाया जा सकता है और अगर घर में कोई पार्टी वगैरह है तो स्टार्टर के तौर पर भी पेश किया जा सकता है। कोई मेहमान घर आ जाए, तो नाश्ते के रूप में भी परोसा जा सकता है। पर ध्यान रखें कि जब इसे नाश्ते के तौर पर बनाएं, तो अंत में थोड़ा सफेद सिरका और सोया सॉस, टोमैटो सॉस अवश्य डालें। इससे इसका स्वाद बढ़ जाता है। नाश्ते के रूप में बनाते समय इसमें चाहें, तो कुछ टुकड़े शिमला मिर्च के भी डाल सकते हैं। ■

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं

सेहत

रोग प्रतिरोधक क्षमता यानी इम्युनिटी के कमजोर होने के कारण कुछ लोग बार-बार बीमार पड़ते हैं। वहीं कुछ लोगों बड़ी से बड़ी बीमारी से भी पार पा जाते हैं। आखिर ऐसा क्यो हैं? ये सवाल मन में आते हैं। दरअसल, प्रत्येक शरीर में प्राकृतिक तौर पर बीमारियों यानी नुकसानदेह जीवाणुओं, विषाणुओं और माइक्रोब्स आदि से लड़ने की क्षमता होती है। इसे ही रोग प्रतिरोधक शक्ति या इम्यूनिटी कहते हैं। वातावरण में मौजूद जीवाणु और विषाणु जब हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं, तो हमारे शरीर का प्रतिरोधक तंत्र उन्हें परास्त कर देता है। लेकिन, कई बार ये जीवाणु और विषाणु शरीर के प्रतिरोधक तंत्र को भेद देते हैं, जिसके कारण हम बीमार पड़ जाते हैं।

कमजोर होने के कारण

- लंबे समय तक बाजार या पैकेट वाला खाना खाने से रोग प्रतिरोधक क्षमता प्रभावित होती है। कारण कि एक तो इन खानों में प्रिजरवेटिव्स के रूप में हानिकारक रसायन होते हैं दूसरा इन खानों से शरीर को सही पोषण नहीं मिलता, जिसके कारण आप बार-बार बीमार पड़ते हैं।
- देर तक जागना और देर तक सोते रहना या फिर दिन में सोना और रात में जागने से भी प्रतिरक्षा प्रणाली प्रभावित होती है।
- पानी कम पीने से भी प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होती है।
- हम शरीर को जैसा ढालते हैं, शरीर वैसा ही बन जाता है। इसलिए अधिक शारीरिक या मानसिक श्रम या कोई कार्य नहीं करने से भी हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली पर असर पड़ता है।
- बहुत सारे लोग सुबह की सैर, योग या किसी भी प्रकार के कसरत को बेकार मानकर नहीं करते, इससे भी हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली प्रभावित होती है।

प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के उपाय

- स्वस्थ रहना और बीमारियों से बचना है तो जरूरी है कि शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाया जाए। योग, कसरत या सुबह की सैर करके शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। अनुलोम-विलोम, प्रणायाम, कपालभाती, ब्रह्मारी, ओम के ध्यान के साथ ताड़ासन, वृक्षासन, हस्तपादासन, भुजंगासन, मकरासान, अर्धकटिचक्रासन और सूर्य नमस्कार जैसे कुछ योगासनों से भी शरीर की रोगों से लड़ने की क्षमता में बढ़ोतरी होती है।
- आजकल कई लोगों में विटामिन डी की कमी देखी गई है। विटामिन डी की कमी से भी रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होती है। इसलिए सुबह नौ बजे से पहले की धूप का सेवन जरूर करें। इससे कई रोगों से लड़ने की ताकत तो मिलती ही है, साथ ही हड्डियां भी मजबूत होती हैं। विटामिन डी की कमी को दूर करने के लिए तिल या कच्ची मूंगफली का दूध भी ले सकते हैं।
- सुबह उठने के बाद खाली पेट पानी पिएं। ऐसा करने से पित्त पानी के साथ पेट में चला जाता है और मल-मूत्र के साथ शरीर से बाहर निकल जाता है। विषाक्त पदार्थों के शरीर से बाहर निकलने से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।
- पौष्टिक और संतुलित आहार लेने की आदत डालें। दिनचर्या में विटामिन, मिनरल, कार्बोहाइडेट और प्रोटीन युक्त आहार को जरूर शामिल करें। निश्चय कर लें कि हर रोज आहार में अंकुरित अनाज, दूध, फल और मौसमी हरी सब्जियां जरूर हों। भोजन में सलाद और दाल का सेवन अधिक करें। ये शरीर की रोग प्रतिरोधकता को बढ़ाती हैं।
- बादाम, किशमिश और अंजीर जैसे सूखे मेवों को रात में भिंगोकर रखें और सुबह खाली पेट खाएं। इससे न सिर्फ शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, बल्कि शरीर को ताकत भी मिलती है। सूखे मेवे शरीर में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले 'नेचुरल किलर सेल्स' को बढ़ाते हैं, जो विषाणुओं और जीवाणुओं को नष्ट करने में सहायक होते हैं। बादाम और मूंगफली में विटामिन-ई की प्रचुरता होती है। यह आपको कैंसर और दिल की बीमारी से बचाता है।
- नए शोध बताते हैं कि कई लोगों के बार-बार बीमार होने का एक प्रमुख कारण पर्याप्त नींद नहीं लेना भी होता है। यही कारण है कि बीमारियों की शिकायत लेकर जाने वाले मरीजों को डॉक्टर हफ्ते भर आराम करने या फिर भरपूर नींद लेने की सलाह देते हैं। स्वस्थ शरीर के लिए सात या आठ घंटे की नींद जरूरी है।
- आज सभी बीमारियों की जड़ में तनाव है। इसलिए तनाव से दूर रहने के लिए योग या ध्यान (मेडिटेशन) करें।
- दिनभर में आठ गिलास या दो लीटर पानी जरूर पिएं।
- ओजवर्धक चीजों के सेवन से प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। गिलोय, अश्वगंधा, लहसुन, हल्दी, गुलर और आंवले को ओजवर्धक माना जाता है। ये सारी चीजें प्रतिरक्षा प्रणाली को प्रभावित करती हैं, इसलिए आयुर्वेद में इन्हें 'मॉड्यूलेटर' कहा जाता है। ओजवर्धक चीजों के सेवन के साथ, दिनचर्या, व्यवहार और खानपान में बदलाव करके शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। इसके अलावा खाने में धनिया पाउडर, काली मिर्च, सौंठ आदि के सेवन से भी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मिलती है। ■



www.readwhere.com

अभिव्यक्ति की बदलती तस्वीर



भारी भरकम कैमरों के दिन लद चुके हैं। आज हर कोई मोबाइल फोन से सेल्फी लेने का दीवाना है। आज लोग खाने से पहले खाने की फोटो खींचने और उसे अपने सोशल अकाउंट पर अपलोड करने के लिए बेचैन रहते हैं। सोशल नेटवर्क की दुनिया हो या आम कैमरे की दुनिया, फोटोग्राफी ने लोगों को नया नजरिया प्रदान किया है। फोटोग्राफी के दिलचस्प सफर के बारे में बता रही हैं स्पर्धा।

यदि आप किसी ऐसी जगह की खूबसूरती से वाकिफ हैं जहां आप कभी गए नहीं हैं तो इसका मतलब यह है कि आप सोशल नेटवर्किंग साइट इंस्टाग्राम या फेसबुक पर इन्हें देख चुके हैं। तस्वीरों की दुनिया में आमूलचूल बदलाव आता जा रहा है। फोन में उपलब्ध फिल्टर के जरिए तस्वीरों के रंग को बदला जा सकता है। रंगीन तस्वीरों को पुरानी तस्वीरों की तरह लुक दे सकते हैं या विभिन्न पृष्ठभूमि के साथ इन्हें जोड़ सकते हैं। तस्वीरों को पुराने जमाने के ब्लैक एंड व्हाइट फोटो की तरह भी एडिट किया जा सकता है। दरअसल, तस्वीरों की दुनिया में बड़ा बदलाव ब्लैक एंड व्हाइट के जमाने से ही तो आया है। इन तस्वीरों ने पत्रकारिता को भी एक नया मोड़ दिया है।

मैथ्यू ब्रौडी ने दिखाई युद्ध की तस्वीर

आज भले ही टीवी चैनलों के जरिए हमें पता रहता है कि युद्ध में क्या और कैसे हो रहा है? लेकिन एक समय था, जब नागरिकों को युद्ध क्षेत्र में हो रही घटनाओं के बारे में कुछ पता नहीं चलता था। आज सैन्य संघर्षों पर राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत कविताएं लिखी जाती हैं और स्केच बनाए जाते हैं। गौरतलब है कि युद्ध के दौरान फोटो जर्नलिज्म के दौर की पहली तस्वीर मैथ्यू ब्रौडी ने ली थी और इनकी खींची तस्वीरों ने न्यूयॉर्क टाइम्स को यह लिखने पर मजबूर कर दिया कि मैथ्यू की तस्वीरों ने अमेरिकी लोगों तक युद्ध की असली सच्चाई को पहुंचाया है। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान भारतीय सेना की खींची कुछ दुर्लभ तस्वीरों ने युद्ध की ठोस सच्चाई और सैनिकों के कष्ट भरे दिनों को सामने लाने का काम किया। भोजन का इंतजार करते सैनिक, फिलस्तीन की नदी में नहाते सैनिक, बगदाद के एक रेलवे स्टेशन को सुरक्षा प्रदान करते सैनिक, गैस मास्क ड्रिल के दौरान खींची तस्वीरें प्रथम विश्व युद्ध के दौरान भारतीय सैनिकों के जोश और जज्बे को बेहतरीन तरीके से उजागर करती हैं।

फोटोग्राफी के रघु

तस्वीरों की दुनिया में रघु राय का बड़ा नाम है। उन्होंने भारत में फोटोग्राफी की दुनिया को लगभग बदल दिया। इंदिरा गांधी से लेकर मदर टेरेसा और बाद में 1971 में युद्ध के दौरान शरणार्थी कैंप में रहने को मजबूर हजारों लोगों के दुख-दर्द को उन्होंने आम लोगों तक पहुंचाया। खाली सीवेज पाइप में रहने की मजबूरी, खाने की किल्लत से भरे दिन, इन सब तकलीफों को दुनिया ने तभी समझा, जब रघु राय की तस्वीरें सामने आईं।

रंगीन तस्वीरों का जमाना

जल्द ही तस्वीरों ने रंग अख्तियार करना शुरू कर दिया। तस्वीरें रंगों में मुस्कराने लगीं। इस समय ग्लैमर इंडस्ट्री का रंग लोगों पर धीमे-धीमे चढ़ रहा था। हीरो-हीरोइन की रंगीन तस्वीरें अखबार और पत्रिकाओं में छपने लगीं थीं। लोग उनकी तस्वीरें देखते और वैसे ही स्टाइल को अपनाने की कोशिश करते। इस बीच, तस्वीरों ने विज्ञापन की दुनिया में भी कदम रखना शुरू किया था। मिलिंद सोमन और मधु सप्रे का वह ब्लैक एंड व्हाइट विज्ञापन आज भी लोगों के जेहन में है, जिसे लेकर दोनों जेल जाते-जाते बचे थे। इस विज्ञापन में मिलिंद और मधु केवल जूते पहने और गले में अजगर लपेटे नजर आए थे। इस विज्ञापन के आने के बाद मुंबई पुलिस ने मिलिंद और मधु के खिलाफ केस भी दर्ज किया था। वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के तहत विज्ञापन एजंसी पर भी मुकदमा दर्ज किया गया था।

डिजिटल कैमरे का इस्तेमाल

शादी के अलबम में भी कई तरह के प्रयोग होने लगे थे। दुल्हन को तमाम तरह के निर्देश दिए जाने लगे कि वह किस तरह का पोज करे, कैसे कपड़े पहने ताकि तस्वीरें खूबसूरत आएं। इस समय डिजिटल कैमरा भी लॉन्च हो चुका था और जन्मदिन जैसे छोटे आयोजनों में भी इसका प्रयोग किया जाने लगा था। पहले की तरह तस्वीरों को अलबम के बजाय लैपटॉप, कंप्यूटर या मेल में सुरक्षित रख लिया जाने लगा। कैमरे की इस बढ़ती मांग को देखते हुए याशिका कैमरा कंपनी ने महज 500 रुपये में कैमरा बेचना शुरू कर दिया था।

मोबाइल क्रांति ने दिया नया आयाम

कैमरे के बाद आई मोबाइल क्रांति ने तो मानो कैमरे को भुला ही दिया। इसी समय विज्ञान की दुनिया में भी क्रांति तब आई, जब अमेरिकी स्पेस एजंसी नासा ने पहली बार चांद पर इंसान के पहुंचने की तस्वीरें जारी कीं। सोशल मीडिया साइट्स पर अपलोड की गईं करीब 12 हजार तस्वीरों में चांद पर जाने वाले अंतरिक्ष यात्रियों के चांद पर उतरने, उनकी दिनचर्या, चांद की सतह और वहां से धरती की तस्वीरें शामिल थीं। इनमें 1969 में नील आर्मस्ट्रांग के अपोलो-11 की भी तस्वीरें शामिल थीं। विज्ञान की दुनिया में एक खास महीना सितंबर 2014 का भी है, जब भारत के मार्स ऑर्बिटर मिशन मंगलयान ने मंगल ग्रह की पहली तस्वीर भेजी थी। इसरो के मार्स ऑर्बिटर के ट्विटर हैंडल ने लाल ग्रह की पहली तस्वीर भेजी थी, जिसका कैप्शन था- यहां का दृश्य बढ़िया है। इसी बीच मोबाइल कैमरा ने तस्वीरें खींचने के प्यार को नया आयाम दिया।

अब फोन से तस्वीरें रोजाना खींची जाती हैं और लोग इन्हें प्रिंट कराने के बारे में लोग भूलने लगे हैं। फोन में उपलब्ध फिल्टर तस्वीरों को मनचाहा रूप देने में माहिर हैं। इंस्टाग्राम पर दस लाख फॉलोवर्स वाले जैसन एम पीटरसन पिछले 25 सालों से केवल ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीरें ही खींचते रहे हैं। 'ये हैं मोहब्बतें' समेत कई धारावाहिकों में दिख चुके टीवी एक्टर राज सिंह अरोड़ा की तस्वीरों को पसंद करने वाले इंस्टाग्राम और फेसबुक पर भरे पड़े हैं। राज को तस्वीरें खींचना बहुत पसंद है। हिमाचल से लेकर न्यूयॉर्क, लेह-लद्दाख और मुंबई तक की सुंदर तस्वीरें उनके पास हैं। राज के फेसबुक और इंस्टाग्राम हैंडल पर मौजूद तस्वीरें आम न होकर बेहद खास हैं। इतनी खूबसूरत कि देखने वाले को उस जगह से प्यार हो जाए और वह आह भरकर बोले कि मुझे भी वहां जाना है।

सोशल नेटवर्क की दुनिया हो या आम कैमरे की दुनिया, फोटोग्राफी ने लोगों को नया नजरिया प्रदान किया है। लंदन के रहने वाले कई अवॉर्ड जीत चुके मेक्सिकन फोटोग्राफर एंटोनियो ऑलमोस कहते हैं, लोग रेस्तरां में खाने जाते हैं लेकिन खाने से पहले वे भोजन की तस्वीरें लेते हैं। मुझे आप लोग गलत मत समझिए। मुझे भी आइफोन और इंस्टाग्राम पसंद है लेकिन आप आइफोन पर खूबसूरत तस्वीर लेकर उसे प्रिंट कराके तो देखिए। मेरे लिए फोटोग्राफी का अल्टीमेट एक्सप्रेशन प्रिंट है। जिस तरह जीवन को दौड़कर नहीं जिया जा सकता, उसी तरह तस्वीरें सिर्फ लेने के लिए नहीं बल्कि बनाने के लिए भी होती हैं। ऑलमोस की बात काफी हद तक सही भी है लेकिन इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि फोटोग्राफी ने आम लोगों के लिए एक नई दुनिया की खोज की है। ❑

नन्ही दुनिया

कहानी

करनी का फल

पूरन सरमा

एक गांव में एक वृद्धा रहती थी। उसका एक दस साल का पुत्र था। एक दिन वृद्धा से उसके पुत्र ने पूछा- मां! गांव में अन्य लोगों के पास अच्छे पक्के मकान हैं और हमारे पास यह घास-फूस की झोंपड़ी ही क्यों है? हमें पक्के मकान क्यों नहीं मिले? मां की आंखें पुत्र से ऐसी भोली बात सुन छलछला आईं। वह बोली, 'बेटा! यह सब हमारी करनी के फल हैं। भगवान उसे वैसा ही फल देता है, जैसा वह कार्य करता है।' यह सुन उसका भोला पुत्र बोला, 'मां! भगवान कहां मिलेंगे? मैं उनसे मिलूंगा।' यह सुन कर बूढ़ी मां हंसती हुई बोली- 'बेटा! हमारे ऐसे कर्म कहां जो भगवान हमे मिल जाएं? भगवान तो ऋषि-मुनियों को मिलते हैं।'

'नहीं मां! मैं तो भगवान से मिलूंगा!' इस प्रकार उसने बालहठ शुरू कर दी और भगवान को ढूंढने जाने की योजना बना ली। सारे गांव में यह चर्चा फैल गई। यह बात जब गांव के राजा को मालूम पड़ी, तो उसने बालक को संदेश भेज राजमहल में बुलवाया। राजा बोला-'भई, तुम भगवान के पास जा ही रहे हो तो जरा भगवान से पूछना कि हमारे राजा के संतान क्यों नहीं होती है।'



तभी मंत्री बोला-'नन्हें! भगवान से तुम मेरी बात भी पूछना कि मेरे घर की दरिद्रता भला दूर क्यों नहीं होती।' अच्छा कहता हुआ वह बालक भगवान की तलाश में जंगलों की ओर बढ़ गया।

जंगलों को पार करता हुआ वह एक भयानक और डरावने स्थान पर पहुंचा गया। रात होने में ज्यादा समय न था, सो वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया। उसी पेड़ पर एक पति-पत्नी का जोड़ा अलग-अलग खटोलों में आराम कर रहा था। पति को नन्हें पर दया आ गई और वह अपनी पत्नी से बोला-'देखो, उस बालक को जंगली जानवर खा जाएंगे, तो क्यों न हम दोनों एक ही खटोले में सो जाए और एक खटोला उस बच्चे को दे दें!' यह सुनते ही पत्नी तुनक कर बोली-'तुम्हें ज्यादा दया उमड़ रही है तो स्वयं नीचे बैठ जाओ और उसे खटोले में बैठा दो।'

पति को बात लग गई। उसने वैसा ही किया। रात को जंगली जानवर आए और पति को मारकर घसीट ले गए। सवेरा हुआ। नन्हा पेड़ से उतर कर अपने ध्येय के लिए आगे बढ़ा। वह अब एक तालाब पर जा पहुंचा था। वहां पहुंचकर उसने सोचा कि उसे अब भगवान नहीं मिलेंगे, पर तभी ब्राह्मण के रूप में भगवान प्रकट हुए और उससे बोले-'तुम्हें कुछ पूछना हो तो पूछो।' वह बोला-'चतुर्भुज रूप में आओ, तब पूछूंगा।'

भगवान तुरंत चतुर्भुज रूप में आए। बालक ने भगवान को प्रणाम कर सबसे पहले राजा का प्रश्न पूछा। इसपर भगवान बोले-'राजा को अपने महल की अमुक दीवार तुड़वा देनी चाहिए। दीवार में उसे जो पुस्तक प्राप्त हो उसे उसका पाठ करना चाहिए।' राजा के प्रश्न का उत्तर सुनकर बालक ने अब मंत्री का प्रश्न पूछा। भगवान बोले-'उसे अपनी युवा कन्या का विवाह शीघ्र कर देना चाहिए।' मंत्री के प्रश्न का उत्तर जानने के बाद उसने स्वयं के बारे में पूछा तो भगवान बोले-'इस बारे में तुम्हें राजा का होने वाला पुत्र बताएगा।'

अपने प्रश्नों का उत्तर सुन बालक गांव लौट आया। फिर राजा और मंत्री को उनके प्रश्नों के उत्तर बताया। राजा और मंत्री ने बिलकुल वैसा ही किया, जैसा बालक ने उन्हें बताया। कुछ समय बाद रानी गर्भवती हुई और मंत्री की दरिद्रता मिट गई।

समय आने पर रानी का पुत्र पैदा हुआ। कुछ वर्षों बाद राजा ने नन्हें को बुलाकर कहा-'तुम अपने प्रश्नों के उत्तर मेरे पुत्र से पूछ लो।' नन्हें ने अपने कर्मफल के बारे में पूछा। वह शिशु बोला-'मूर्ख नन्हें! अभी तक तुम नहीं समझे ? मैं वही पति हूं जिसने तुम्हें खटोले में बिठाया था और स्वयं जंगली जानवरों के हाथों मारा गया था। अब मैं एक बहुत बड़े राजा का पुत्र हूं और समय आने पर राजा भी बनूंगा। मेरी पत्नी जिसने तुझे तिरस्कृत किया था वह सुअरी बनी गंदे नाले में पड़ी है। यही तो कर्मफल है।'

यह सुन नन्हा सोचता हुआ अपने घर लौट आया। अब उसे अपनी स्थिति के प्रति कोई असंतोष नहीं था। ❑

कविता



आ गए पढ़ने के दिन

विप्रम

दिन-रात एक करने के दिन,
आ गए फिर से पढ़ने के दिन।

समय कम है बहुत है पढ़ना
खेल- कूद से कुछ है बचना
दिन-रात नित रटने के दिन,
आ गए फिर से पढ़ने के दिन।

कसरत संग-संग ध्यान लगाना
भूख से अधिक तुम न खाना
हिम्मत से झट खटने के दिन,
आ गए फिर से पढ़ने के दिन।

अब का पढ़ा काम आएगा
परीक्षा में अंक तमाम लाएगा
भविष्य सुनहरा करने के दिन,
आ गए फिर से पढ़ने के दिन। ❑

शब्द-भेद

कुछ शब्द एक जैसे लगते हैं। इस तरह उन्हें लिखने में अक्सर गड़बड़ी हो जाती है। इससे बचने के लिए आइए उनके अर्थ जानते हुए उनका अंतर समझते हैं।

भाना



भाना शब्द के कई अर्थ होते हैं। भाना का एक मतलब चमकना, तोड़ना, चक्कर देना और घुमाना होता है। वहीं इसका एक मतलब भान या आभास होना, जान पड़ना, अच्छा लगना, पसंद आना या शोभा देना भी होता है।

राहु / राहू



भारतीय ज्योतिष के अनुसार नौ ग्रह में से एक को राहु कहते हैं। जबकि इसका एक अर्थ रास्ता भी होता है। वहीं राहू मछली की एक प्रजाति है। इसे रोहू भी कहा जाता है, यह मछली ताजे और मीठे जल में रहती है।

